लोकतंत्र को समझना – एक उभरती अवधारणा

DR. POOJA VARUN

ASSISTANT PROFESSOR, POLITICAL SCIENCE, S.D. GOVT. COLLEGE, BEAWAR

सार

लोकतंत्र (Democracy) केवल एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर विकसित होने वाली (उभरती) अवधारणा है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'जनता का शासन' (लोक + तंत्र), लेकिन समय के साथ इसके मायने, स्वरूप और प्राथमिकताओं में भारी बदलाव आया है।

आज के वैश्विक परिदृश्य में लोकतंत्र को केवल "चुनाव कराने" तक सीमित नहीं देखा जाता, बल्कि इसे नागरिकों के अधिकारों, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के रूप में समझा जाता है।

आइए लोकतंत्र की इस उभरती अवधारणा को इसके बदलते आयामों के माध्यम से समझते हैं:

1. लोकतंत्र का पारंपरिक बनाम आधुनिक स्वरूप

- पारंपरिक दृष्टिकोण (प्रतिनिधिक लोकतंत्र): इसमें जनता पांच या निश्चित वर्षों में एक बार अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। सरकारें नीतियां बनाती हैं और नागरिक मुख्य रूप से मूक दर्शक या केवल मतदाता होते हैं।
- आधुनिक/उभरता दृष्टिकोण (सहभागी लोकतंत्र): आज लोकतंत्र में जनता की सक्रिय भागीदारी (Active Participation) पर जोर दिया जा रहा है। अब लोग नीतियों के निर्माण, सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) और सूचना के अधिकार (RTI) के माध्यम से सरकार से हर दिन जवाबदेही मांगते हैं।

2. उभरती अवधारणा के प्रमुख स्तंभ (Key Emerging Pillars)

- डिजिटल लोकतंत्र (E-Democracy): इंटरनेट और सोशल मीडिया ने लोकतंत्र को एक नया मंच दिया है। अब नागरिक अपनी समस्याओं को सीधे सरकार तक पहुंचा सकते हैं, ऑनलाइन अभियानों के जरिए नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं और पारदर्शिता की मांग कर सकते हैं।
- समावेशी लोकतंत्र (Inclusive Democracy): पुरानी व्यवस्थाओं में समाज के हाशिए पर मौजूद लोगों (महिलाएं, अल्पसंख्यक, आदिवासी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) की आवाज दब जाती थी। लोकतंत्र की नई अवधारणा में 'सबका प्रतिनिधित्व और सबका विकास' अनिवार्य माना गया है।
- विमर्शकारी लोकतंत्र (Deliberative Democracy): इसका अर्थ है कि केवल बहुमत के आधार पर फैसले न लिए जाएं, बल्कि कानून बनाने से पहले विभिन्न पक्षों के बीच गहन चर्चा, वाद-विवाद और आम सहमति बनाने का प्रयास किया जाए।

3. लोकतंत्र के सामने समकालीन चुनौतियाँ

जैसे-जैसे लोकतंत्र विकसित हो रहा है, इसके सामने नई चुनौतियाँ भी आ रही हैं:

- गलत सूचना और फेक न्यूज: डिजिटल युग में सोशल मीडिया के जरिए चुनाव परिणामों और जनभावनाओं को प्रभावित करने का खतरा बढ़ा है।
- आर्थिक असमानता: अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत (एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य) को कमजोर करती है।

- लोकलुभावनवाद (Populism): कई बार नेता जनता की तार्किक मांगों के बजाय भावनात्मक और लोकलुभावन वादों से सत्ता हासिल करते हैं, जो दीर्घकालिक लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह हो सकता है।

परिचय

लोकतंत्र शासन की एक ऐसी संरचना है जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि सत्ता जनता के पास होती है। लोकतंत्र में, नागरिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से सत्ता का प्रयोग करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सरकारी निर्णय जनता की सामूहिक इच्छा को प्रतिबिंबित करें और साथ ही उनके व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा भी हो। यह एक जीवंत प्रणाली है जो स्थानीय स्कूल बोर्ड के निर्णयों से लेकर राष्ट्रीय नीतिगत दिशा-निर्देशों तक, आपके दैनिक जीवन को सीधे प्रभावित करती है।

आधुनिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था नियंत्रण और संतुलन, संवैधानिक संरक्षण, नागरिक भागीदारी और सत्ता के केंद्रीकरण को रोकने वाली संस्थाओं पर आधारित है। यह प्रतिस्पर्धी चुनावों, नागरिक स्वतंत्रता और सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण पर भी निर्भर करती है। ये तत्व एक ऐसा ढांचा तैयार करते हैं जहां नागरिक विभिन्न भागीदारी तंत्रों के माध्यम से सरकारी निर्णयों को सार्थक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की नींव परस्पर जुड़े सिद्धांतों पर टिकी है। जनसंप्रभुता, जो कि मूल सिद्धांत है, यह स्थापित करती है कि वैध राजनीतिक सत्ता शासित लोगों की सहमति से प्राप्त होती है। राजनीतिक समानता के साथ मिलकर, यह सुनिश्चित करता है कि हर किसी को अपनी पृष्ठभूमि या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना लोकतंत्र में भाग लेने का समान अधिकार है। अल्पमत के अधिकारों के साथ बहुमत का शासन एक ऐसा संतुलन बनाता है जहां लोकतांत्रिक निर्णय बहुमत की इच्छा को प्रतिबिंबित करते हैं, साथ ही असहमति व्यक्त करने वालों के अधिकारों की रक्षा भी करते हैं।[1,2,3]

प्रत्यक्ष लोकतंत्र तब होता है जब नागरिक सभाओं के माध्यम से और मुद्दों, नीतियों और कानूनों पर सीधे मतदान करके नीति निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। हालांकि, आधुनिक समाजों की जटिलता और विस्तार ने प्रतिनिधि लोकतंत्र को, जिसे लोकतांत्रिक गणराज्य भी कहा जाता है, प्रमुख मॉडल बना दिया है। प्रतिनिधि लोकतंत्र में, नागरिक अधिकारियों का चुनाव करते हैं जो नागरिकों और सरकार के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।

लोकतंत्र के कई प्रकार होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अलग-अलग शासन प्रणाली होती है। संसदीय प्रणाली में कार्यपालिका की शक्ति विधायिकाओं में केंद्रित होती है, जिससे गठबंधन निर्माण और आम सहमति पर आधारित शासन को बढ़ावा मिलता है, जबकि राष्ट्रपति प्रणाली में कार्यपालिका और विधायिका अलग-अलग होती हैं, जिससे जवाबदेही के अलग-अलग तंत्र बनते हैं। संघीय लोकतंत्र में शक्ति कई सरकारी स्तरों पर वितरित होती है, जिससे विभिन्न क्षेत्रीय हितों का ध्यान रखा जाता है, जबकि एकात्मक प्रणाली में सत्ता केंद्रीकृत होती है, साथ ही लोकतांत्रिक जवाबदेही भी बनी रहती है।

विचार-विमर्श

जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुशासन की आवश्यकता होती है। लोकतांत्रिक वैधता को प्रशासनिक प्रभावशीलता के साथ मिलाकर एक स्थायी और उत्तरदायी सरकार की नींव रखी जा सकती है जो जनता का विश्वास और समर्थन बनाए रखती है।

लोकतांत्रिक सिद्धांत

पारदर्शिता और जवाबदेही

नागरिक भागीदारी और नागरिक जुड़ाव

उत्तरदायी नेतृत्व और नीति निर्माण

लोकतंत्र और शासन में संतुलन बनाए रखना

लोकतंत्र में सहभागिता, विचार-विमर्श और जवाबदेही पर जोर दिया जाता है, जबकि प्रभावी शासन के लिए दक्षता, विशेषज्ञता और निर्णायक कार्रवाई आवश्यक है। सफल लोकतांत्रिक प्रणालियाँ इन दोनों को बनाए रखने वाली संस्थाओं और राजनीतिक प्रथाओं का निर्माण करके संतुलन स्थापित करती हैं, यह समझते हुए कि इनमें से किसी से भी पूरी तरह समझौता नहीं किया जा सकता है।[4,5,6]

इस संतुलन के उदाहरण

बहुमत के शासन और अल्पसंख्यक अधिकारों के बीच संतुलन: लोकतंत्र को अल्पसंख्यक हितों और स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए बहुमत के निर्णयों का सम्मान करना चाहिए।

जनमत बनाम विशेषज्ञ ज्ञान : जटिल नीतिगत चुनौतियों का समाधान करने के लिए अक्सर विशेषज्ञों के सुझावों की आवश्यकता होती है जो जनमत से भिन्न हो सकते हैं। सशक्त लोकतांत्रिक प्रणालियाँ जनता के प्रति जवाबदेही का त्याग किए बिना विशेषज्ञ सलाह को एकीकृत करती हैं।

अल्पकालिक चुनावी चक्र बनाम दीर्घकालिक योजना : चुनावी प्रोत्साहन राजनेताओं को दीर्घकालिक समाधानों के बजाय तात्कालिक लाभों को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। प्रभावी लोकतंत्र दूरदर्शी नीति निर्माण और निरंतर प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने के तरीके स्थापित करते हैं, भले ही नीतियां शुरू में अलोकप्रिय हों।

सुशासन के माध्यम से लोकतंत्र को मजबूत बनाना

लोकतांत्रिक लचीलेपन को बढ़ाने के लिए लोकतांत्रिक संस्थानों और शासन पद्धतियों दोनों को मजबूत करने के लिए सुनियोजित प्रयासों की आवश्यकता होती है। सफल लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण में संस्थागत

डिजाइन में सुधार के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रथाओं का समर्थन करने वाली सांस्कृतिक और शैक्षिक पहलों का संयोजन शामिल है ।

संस्थागत लचीलापन और विश्वास का निर्माण : मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं को संकट के समय तनाव का सामना करने और अपनी प्रभावशीलता बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। संस्थागत लचीलेपन में अतिरिक्त सुरक्षा उपाय, आपातकालीन स्थितियों के लिए स्पष्ट प्रक्रियाएं और संस्थागत अनुकूलन और सुधार के लिए तंत्र बनाना शामिल है। जनता का विश्वास बनाने के लिए पारदर्शी संचालन, नियमों का सुसंगत अनुप्रयोग और नागरिकों की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करने का प्रमाण आवश्यक है।

समावेशी भागीदारी को बढ़ावा देना : लोकतांत्रिक भागीदारी का विस्तार करने के लिए उन बाधाओं को दूर करना आवश्यक है जो नागरिकों को राजनीतिक प्रक्रियाओं में सार्थक रूप से भाग लेने से रोकती हैं। इसमें जटिल मतदाता पंजीकरण आवश्यकताओं, चुनाव के असुविधाजनक समय और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करने वाली पहुंच संबंधी समस्याओं जैसी बाधाओं का समाधान करना शामिल हो सकता है।

सरकारी पारदर्शिता और निगरानी को बढ़ाना : पारदर्शिता संबंधी पहलों का उद्देश्य केवल सूचना जारी करना ही नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि सरकारी आंकड़े नागरिकों के लिए सुलभ, समझने योग्य और कार्रवाई योग्य हों। निगरानी संस्थानों को मजबूत बनाने के लिए उन्हें पर्याप्त संसाधन, कानूनी अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करना आवश्यक है ताकि वे सरकारी गतिविधियों की प्रभावी ढंग से जांच कर सकें। [7,8,9]

लोकतांत्रिक शिक्षा और नागरिक साक्षरता को बढ़ावा देना : दीर्घकालिक लोकतांत्रिक स्वास्थ्य उन नागरिकों पर निर्भर करता है जो लोकतांत्रिक सिद्धांतों को समझते हैं, नागरिक कौशल रखते हैं और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं। नागरिक शिक्षा कार्यक्रमों में लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली और राजनीतिक सूचनाओं और तर्कों का मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक आलोचनात्मक सोच कौशल सिखाए जाने चाहिए।

परिणाम

लोकतंत्र का विचार अपनी नैतिक शक्ति और लोकप्रियता दो प्रमुख सिद्धांतों से प्राप्त करता है:

1. व्यक्तिगत स्वायत्तता : यह विचार कि किसी को भी दूसरों द्वारा थोपे गए नियमों के अधीन नहीं होना चाहिए। लोगों को (तर्कसंगत सीमा के भीतर) अपने जीवन को नियंत्रित करने में सक्षम होना चाहिए।

2. समानता : यह विचार कि समाज में लोगों को प्रभावित करने वाले निर्णयों को प्रभावित करने का सभी को समान अवसर मिलना चाहिए।

ये सिद्धांत सहज रूप से आकर्षक हैं, और ये समझने में मदद करते हैं कि लोकतंत्र इतना लोकप्रिय क्यों है। बेशक, हम मानते हैं कि यह उचित है कि हमें भी आम नियमों पर निर्णय लेने का उतना ही मौका मिलना चाहिए जितना किसी और को!

समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम यह विचार करते हैं कि सिद्धांतों को व्यवहार में कैसे लाया जाए, क्योंकि हमें परस्पर विरोधी विचारों को सुलझाने के लिए एक तंत्र की आवश्यकता होती है। सरल तंत्र उपलब्ध होने के कारण, लोकतंत्र में अक्सर "बहुमत का शासन" होता है; लेकिन बहुमत के शासन का अर्थ यह हो सकता है कि कुछ लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व कभी नहीं होता। सभी के हितों का प्रतिनिधित्व करने का अधिक वास्तविक तरीका आम सहमति से निर्णय लेना है, जहाँ उद्देश्य साझा हितों को खोजना होता है।

प्राचीन यूनानियों को सर्वप्रथम लोकतंत्र की स्थापना का श्रेय दिया जाता है, हालांकि विश्व के अन्य भागों में भी निश्चित रूप से आदिम लोकतंत्र के पूर्व उदाहरण मौजूद थे। यूनानी मॉडल की स्थापना ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी में एथेंस शहर में हुई थी। उस समय प्रचलित निरंकुश शासन और कुलीनतंत्र के बीच एथेंस का लोकतंत्र विशिष्ट था।

हालांकि, आज हम लोकतंत्र को जिस तरह समझते हैं, उसकी तुलना में एथेंस के मॉडल में दो महत्वपूर्ण अंतर थे:

1. उनकी व्यवस्था प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक रूप थी - दूसरे शब्दों में, लोगों की ओर से शासन करने के लिए प्रतिनिधियों को चुनने के बजाय, "लोग" स्वयं मिलते थे, सरकार से संबंधित प्रश्नों पर चर्चा करते थे और फिर नीति को लागू करते थे।

लोकतंत्र बहुमत का कानून नहीं, बल्कि अल्पमत का संरक्षण है।[10,11,12]

- अल्बर्ट कैमस

2. ऐसी व्यवस्था आंशिक रूप से इसलिए संभव थी क्योंकि "जनता" एक बहुत ही सीमित श्रेणी थी। प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाले लोग जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा थे, क्योंकि महिलाओं, दासों, विदेशियों – और निश्चित रूप से, बच्चों – को इसमें शामिल नहीं किया गया था। फिर भी, भाग लेने वालों की संख्या आधुनिक लोकतंत्र की तुलना में कहीं अधिक थी: लगभग 300,000 लोगों की आबादी में से शायद 50,000 पुरुष प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में शामिल थे।

निष्कर्ष

आज दुनिया में जितने लोकतांत्रिक देश हैं, उतने ही अलग-अलग प्रकार के लोकतंत्र भी मौजूद हैं। कोई भी दो प्रणालियाँ बिल्कुल एक जैसी नहीं हैं और किसी भी प्रणाली को "आदर्श" नहीं माना जा सकता। राष्ट्रपति प्रणाली और संसदीय प्रणाली वाले लोकतंत्र हैं, संघीय या एकात्मक प्रणाली वाले लोकतंत्र हैं, आनुपातिक

मतदान प्रणाली वाले लोकतंत्र हैं, बहुमत प्रणाली वाले लोकतंत्र हैं, राजतंत्र वाले लोकतंत्र भी हैं, और इसी प्रकार अन्य कई प्रकार के लोकतंत्र भी हैं।[13,14]

आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणालियों को एकजुट करने वाली और प्राचीन मॉडल से अलग करने वाली एक बात यह है कि इनमें जन प्रतिनिधियों का उपयोग होता है। कानून बनाने में सीधे भाग लेने के बजाय, आधुनिक लोकतंत्र चुनावों के माध्यम से प्रतिनिधियों का चयन करते हैं, जिन्हें जनता अपनी ओर से शासन करने के लिए भेजती है। ऐसी प्रणाली को प्रतिनिधि लोकतंत्र कहा जाता है। इसे कुछ हद तक "लोकतांत्रिक" कहा जा सकता है क्योंकि यह कम से कम कुछ हद तक ऊपर बताए गए दो सिद्धांतों पर आधारित है: सभी की समानता (एक व्यक्ति - एक वोट) और प्रत्येक व्यक्ति को कुछ हद तक व्यक्तिगत स्वायत्तता का अधिकार।[15]

संदर्भ

1. Smith, Bonnie G., ed. (2008). "Democracy". The Oxford Encyclopedia Women in World History. Oxford University Press. Retrieved 24 February 2021.
2. Schwartzberg, Melissa (2014). "Democracy". The Encyclopedia of Political Thought. pp. 851–862. doi:10.1002/9781118474396.wbept0248. ISBN 978-1-4051-9129-6.
3. "Democracy | Definition, History, Meaning, Types, Examples, & Facts". Encyclopædia Britannica. 16 August 2023. Retrieved 17 August 2023.
4. Przeworski, Adam (2024). "Who Decides What Is Democratic?". Journal of Democracy. 35 (3): 5–16. doi:10.1353/jod.2024.a930423. ISSN 1086-3214.
5. Dahl, Robert A.; Shapiro, Ian; Cheibub, Jose Antonio (2003). The Democracy Sourcebook. MIT Press. p. 31. ISBN 978-0-262-54147-3.
6. Møller, Jørgen; Skaaning, Svend-Erik (January 2013). "Regime Types and Democratic Sequencing". Journal of Democracy. 24 (1): 142–155. doi:10.1353/jod.2013.0010. ISSN 1045-5736. Archived from the original on 22 February 2024.
7. Oxford English Dictionary: "democracy".
8. Watkins, Frederick (1970). "Democracy". Encyclopædia Britannica. Vol. 7 (Expo '70 hardcover ed.). William Benton. pp. 215–23. ISBN 978-0-85229-135-1.
9. Wilson, N.G. (2006). Encyclopedia of ancient Greece. New York: Routledge. p. 511. ISBN 978-0-415-97334-2.
10. Deudney, Daniel (9 November 2008). Bounding Power. Princeton University Press. ISBN 978-0-691-13830-5.
11. Diamond, Larry (15 September 2015). "Timeline: Democracy in Recession". The New York Times. Retrieved 25 January 2016.
12. Fukuyama, Francis (2006). The End of History and the Last Man. Simon and Schuster. ISBN 978-0-7432-8455-4.

13. Wike, Richard; Fetterolf, Janell; Smerkovich, Maria; Austin, Sarah; Gubbala, Sneha; Lippert, Jordan (28 February 2024). "1. Attitudes toward different types of government systems". Pew Research Center.
14. Anderson, Christopher J.; Bol, Damien; Ananda, Aurelia (2021). "Humanity's Attitudes about Democracy and Political Leaders". Public Opinion Quarterly. 85 (4): 957–986. doi:10.1093/poq/nfab056. ISSN 0033-362X. PMC 8754486. PMID 35035302.
15. Hyde, Susan D. (2011). The Pseudo-Democrat's Dilemma: Why Election Observation Became an International Norm. Cornell University Press. ISBN 978-0-8014-6125-5. JSTOR 10.7591/j.ctt7z647.